

साईं सन्तनि जा सरदार शील सनेह मणी।
सति संगति सींगार शील सनेह मणी॥

तुंहिजे चरणनि सां था चितड़ो लायूं जग जंजाल मन मां मिटायूं
अबल चंद्र उदार शील सनेह मणी॥

राम कृष्ण जो तो रंगड़ो रचायो नामु जपाए नर नारियुनि नचायो
करुणा निधि करतार शील सनेह मणी॥

प्रभु कृपा सां मिलियो साईं सोभारो महिर जो परिवर बापू बाझारो
शोभ्या सिंधु सुकुमार शील सनेह मणी॥

श्री जू अमड़ि पद कमल पुजारी रस सां रीझायो अवध बिहारी
वैद्यलि बहुगुण बारु शील सनेह मणी॥

वृन्दावन जी मौज नितु माणीं विचित्र लीला युगल जी ज़ाणीं
रसिक संत रिझिवार शील सनेह मणी॥

शेष शारदा भी पारु न पाइनि क्रोड़ कल्प तक जसड़ो गाइनि
कीरति अगन अपार शील सनेह मणी॥

गरीबि श्रीखण्डि जा मंगल मनायूं देवनि द्वारे मनोतियूं मनायूं
प्रीतम प्राणाधार शील सनेह मणी॥